गोरी घाटी का काला बंदर
एक रहस्य व संरक्षण की आवश्यकता

वन वर्धनिक उत्तराखण्ड नैनीताल

परिचय– अपार जैव विविधता से परिपूर्ण गोरी घाटी अपने क्षेत्र में मौजूद विविध प्राकृतिक पादपों व जन्तुओं एवं उनके वास स्थलों के लिए सम्पूर्ण उत्तराखण्ड में प्रसिद्ध है। ऐसा ही एक रहस्य जेा कि गोरी घाटी अपने अदंर समाहित किये हुए है वह है **काला बंदर।** यह काला बंदर सामान्य बंदर रीसस मकाक से भिन्न है। इसकी आकार और संरचना के आधार पर यह आसाम में पाए जाने वाले आसामी

Figure 2 गोरी घाटी में दिनांक 27.04.2018 को देखे गये काले बंदर

Figure 1 गोरी घाटी में दिनांक 27.04.2018 को देखे गये काले बंदर

मकाक से थोड़ा बहुत मिलता जुलता है, कितुं इसका कोई वैज्ञानिक प्रमाण नही है। तथा इसकी जबड़े की बनावट आसामी मकाक से पूर्णतः भिन्न है। यह एक मध्यम आकार का भूरे सुनहरे रंग का ऊपरी भाग व निचला भाग चौकलेटी रंग का लिए हुए बंदर है। बाकि संपूर्ण शारीरिक भाग सफेद फर लिए हुए है। इनका जबड़ा हल्का बाहर की ओर

निकला होता है। नर के चेहरे का रंग गहरा व आखों के चारों ओर हल्का रंग लिए होता है। वहीं मादा की आखों के चारों ओर लाल रंग का घेरा बना रहता है तथा मुंह व नाक के चारों ओर गुलाबी रंग की नग्न त्वचा होती है। पलकें सफेद रंग की होती हैं। माथे व गालों पर फर का आवरण रहता है, तथा सफेद मोटी बालों की दाढ़ी सी होती है। नर के आखों के थोड़ा ऊपर एक गहरे काले रंग का घेरा सा बना होता है जबकि मादा में यह घेरा सफेद रंग का होता है। इनकी पीठ पर छोटा सा कूबड़ सा निकला होता है। तथा इनकी पूँछ कभी झुकती नही है। कान तिकोने से व बालरहित होते हैं। एक मुख्य अंतर जो इसे सामान्य बंदर से इतर करता है वह है इनकी पूँछ की लंबाई जो कि इनके शारीरिक आकार की लगभग तीन चौथाई होती है। इनका मुख्य भोजन च्यूरा, गरूड, केन, पियूली आदि है। गोरी घाटी में ये सामान्यतः 700 से 1500 मी0 की ऊचाई पर एक सीमित वास स्थल व सीमित संख्या में पाये जाते हैं। यह प्रजाति इनके वास स्थल में लगातार हो रही कमी के कारण लगभग विलुप्तप्राय होने की कगार पर है। इस प्रजाति के बन्दरों को इससे पहले इस क्षेत्र में वर्ष 1948,2006 व 2011 में कुछ शोधकर्ताओं व वनाधिकारियों द्वारा देखा गया था किन्तु उपलब्ध अभिलेखों के अनुसार, अब तक इनके बारे में न तो अलग से कोई वैज्ञानिक आनुवंषिक अध्ययन किया गया है और न ही संरक्षण की कोई पृथक कार्ययोजना बनाई गई है।

वर्तमान वास स्थल व संरक्षण की आवश्यकता–ये काले बंदर एक सीमित क्षेत्र, मुख्यतः विकासखण्ड धारचूला अन्तर्गत बरम के निकट तहसील बंगापानी जनपद पिथौरागढ़ में गोरी नदी के किनारे चिफलतरा, सिराड़ एवं पंयया के पास गुइंया नामक स्थल में पाए जाते हैं। अनुसंधान संस्थान द्वारा किये गये अध्ययन व स्थानीय स्त्रोतों से चुराई गई जानकारीयों के अनुसार इनकी संख्या लगभग 25 से 30 तक ही है। यह क्षेत्र पिथौरागढ़ वन प्रभाग के वन क्षेत्र अस्कोट में पड़ता है। यह संख्या लगभग स्थिर सी है। इनके दल में नवजात शिशु भी कम ही दिखायी देते है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि इस प्रजाति के संरक्षण की तत्काल आवश्यकता है। सामान्य रूप से देखने में यह सामान्य बंदर से भिन्न सीधे सरल गंभीर स्वभाव के एवं कम उपद्रवी लगते हैं। ये

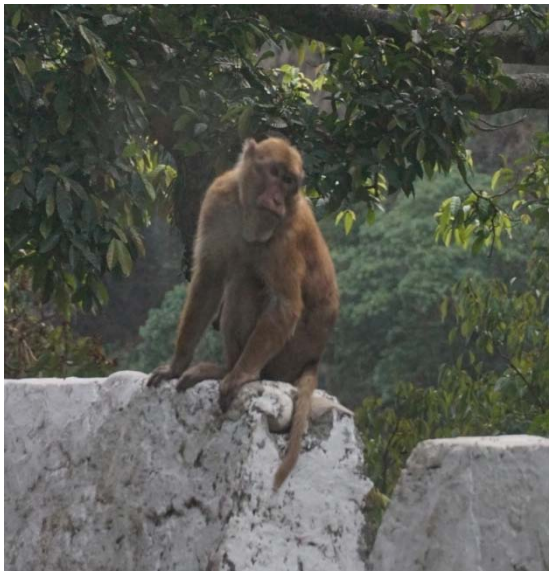

Figure 3 गोरी घाटी में दिनांक 27.04.2018 को देखे गये काले बंदर

मानवीय इलाकों से दूर रहना ही पंसद करते है। इनकी सीमित संख्या इनके वास स्थलों में लगातार हो रही कमी व अब तक इनके आनुवांशिक रूप से कोई प्रमाण न दिखाई देने के कारण इनके संरक्षण के लिए विशेष नीति तैयार कर संरक्षण हेतु कदम उठाना नितांत आवश्यक है। क्योंकि उपलब्ध प्रमाणों से यह पूर्णतया स्पष्ट है कि, यह एक विशिष्ट एवं अलग प्रजाति है जिसकी संख्या व वास स्थल अत्यंत सीमित है।

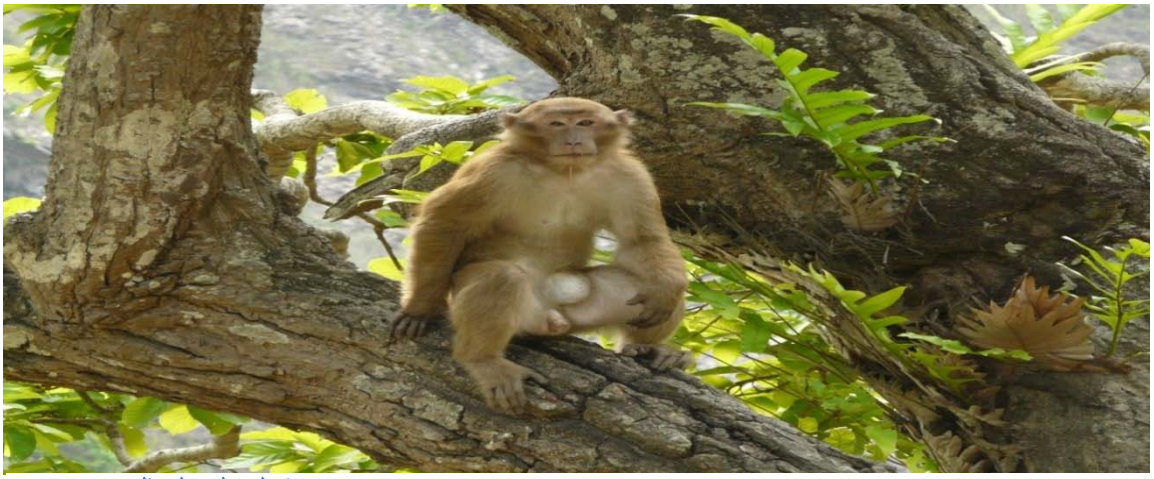

Figure 4 असम में पाये जाने वाले बंदर